कृष्ण भक्त कवयित्रियों में माधुर्य भाव

अमृतेश कुमार मिश्र

भावरुपा भक्ति के दो भेद हैं–वैधी और रागानुरागा। वैधी में शास्त्रों का सहारा लिया जाता है, जबकि रागानुरागा भक्ति में प्रेम का महत्व होता है। इसमें भावना का अतिरेक होना आवश्यक है। हृदय जब भाव एवं ममता की प्रगाढ़ता से अत्यंत द्रवीभूत हो जाता है, तो वहीं प्रेम कहलाता है। इसी भाव की भक्ति को प्रेमरुपा भक्ति कहते है। वस्तुतः कृष्ण काव्य धारा के भक्त किसी बधी–बधायी परिपाटी पर चलने वाले भक्त नहीं है अपितु ये प्रेमानुराग के भक्त है। यही कारण है कि कृष्ण काव्य धारा के भक्तों में माधुर्य भाव की भक्ति अधिक दिखलायी पड़ती है। माधुर्य भक्ति के मुख्यतः तीन अंग स्वीकार किये गए हैं–रुपवर्णन, विरह वर्णन एवं पूर्णतया आत्मसमर्पण। रुपवर्णन के अन्तर्गत भक्त अपने आराध्य के सौन्दर्य का चित्रण करते है तथा अपने आराध्य को पाने के लिए वह निरंतर एक विरहणीं की भाँति वियोग में रहता है। और जो सबसे बड़ी विशेषता है वह यह है कि भक्त अपने आराध्य के सामने पूर्ण रुप से समर्पण कर देता है। भक्त किसी भी दशा में अपने आराध्य का सान्निध्य प्राप्त करना चाहता है और इसके लिए वह संसार के सभी प्रकार के सुखों को तुच्छ समझता है। उनके लिए कृष्ण की भक्ति ही सर्वोच्चय है। माधुर्य भाव के आकर्षण के कारण कृष्ण काव्य के बड़ी लंबी परंपरा रही है। जीवन के ताप एवं युध्द की विभीषिका से इनको राहत भी पहुँचायी। इसलिए अनेक राजा–महराजा,रानियाँ,मुस्लिम वर्ग के लोग भी कृष्ण भक्त होते गए। आम जनता भी तन्मय होकर उनका गुणगान करती रहीं। कृष्ण भक्त कवयित्रियों की परंपरा भी लंबी रही है जिसमें–मीरा, ताज, रसिक बिहारी बनीठनीजी, सुंदर कुँवरिबाई आदि कवयित्रियाँ आती है। उन्होंने माधुर्य भाव से कृष्ण की उपासना की है।